प्रातः सभा 4/1/69 ओमशान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?
रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। तुम इस पाठशाला में बैठ ऊंच दर्जा पाते हो। दिल में समझते हो हम बहुत ऊंच ते ऊंच स्वर्ग का पद पाते हैं। ऐसे बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। अगर स.... को यह निश्चय है तो। सभी एक जैसे तो होते ही नहीं हैं। फर्स्ट से लास्ट नम्बर तक होते हैं। पेपर में भी फर्स्ट से लास्ट तक नम्बर होते हैं। कोई फेल भी होते हैं तो कोई पास भी होते हैं। तो हरेक अपने दिल से पूछे बाबा जो हमको इतना ऊंच बनाते हैं मैं कहां तक लायक बना हूँ? फलाने से अच्छा हूं वा कम? पढ़ाई है ना। देखने में भी आता है जो कोई पेपर में कमजोर होते हैं तो नीचे चले जाते हैं। भल मॉनिटर होगा तो भी कम सबजेक्ट में होगा तो नीचे चला जावेगा। विरला कोई स्कॉलरशिप लेते हैं। यह भी स्कूल है। तुम जानते हो हम सभी पढ़ रहे हैं। इसमें पहले2 निशानी है पवित्रता की। बाप को बुलाया ही है पवित्र बनने लिये। अगर क्रिमनल आई काम करती है तो खुद भी फील करते होंगे। बाबा को लिखते भी हैं बाबा हम इस सबजेक्ट में कम हैं। स्टूडेन्ट की बुद्धि में यह जरूर आता है हम फलाने सबजेक्ट में बहुत2 कम हूं। कोई ऐसे भी समझते हैं हम फेल होंगे। इसमें पहले नम्बर की सबजेक्ट है पवित्रता। बहुत लिखते हैं बाबा हम ने हार खा ली। तो इसको क्या कहेंगे। उनकी दिल में आती होगी अभी मैं तो चढ़ नहीं सकूंगा। तुम पवित्र दुनियां बनाते हो न... । तुम्हारी एमआबजेक्ट ही यह है। बाप कहते हैं बच्चों माम्–एकम् याद करो और पवित्र बनो तो इन (ल0ना0) के घराणे में जा सकते हो। टीचर तो समझते होंगे यह इतना ऊंच पद पा सकेंगे वा नहीं। वह है सुप्रीम टी(चर) यह दादा भी तो स्कूल पढ़ा हुआ है ना। कोई2 छोकड़े भी ऐसे खराब काम करते हैं जो आखिर मास्टर को उनको सज़ा देनी पड़ती है। आगे बहुत जोर से सजाएं देते थे। अभी सज़ा आदि कम कर दी है तो स्टुडेन्ट और ही बिगड़ते हैं। आजकल स्टुडेन्ट कितना हंगामा करते हैं गवर्मेन्ट से। गवर्मेन्ट स्टुडेन्ट को न्यु ब्लड कहते हैं। वह देखो क्या करते हैं, आग लगा देते हैं। अपनी जवानी दिखलाते हैं। यह है ही आसुरी राज्य। जवान लड़के बहुत खराब होते हैं। जवान को ही आग लगी हुई होती है शैतानी की। उनकी आंखें बहुत क्रिमनल होती हैं। देखने में तो बड़े अच्छे आते हैं। जैसे कहा जाता है ना ईश्वर का अन्त नहीं पाया जाता। तो इसमें भी अन्त नहीं पाया जाता। यह किस प्रकार का मनुष्य है। हां, ज्ञान बुद्धि से पता पड़ता है यह कैसा पढ़ता है, उनकी एक्टिविटी कैसी है। कोई तो बात करते हैं जैसे कि मुख से फूल निकलते हैं। कोई तो ऐसे बात करते हैं जैसे कि पत्थर निकलते हैं। देखने में बहुत अच्छे, प्वाइंट आदि भी लिखते हैं; परन्तु हैं पत्थर बुद्धि। बाहर का शो। माया बड़ी दुस्तर है इसलिए गायन है आश्चर्यवत सुनन्ति, अपन को कहलावन्ति हम शिवबाबा (की) सन्तान हैं, औरों को सुनावन्ति, कथन्ति फिर भागन्ति अर्थात् ट्रेटर बनन्ति। ऐसे नहीं होशियार ट्रेटर नहीं बनते। अच्छे2 होशियार भी ट्रेटर बन पड़ते हैं। उस सेना में भी ऐसे होता है। एरोप्लेन सहित ही दूसरे इलाके में चले जाते हैं। यहां भी ऐसे होता है। स्थापना में बड़ी मेहनत लगती है। बच्चों को भी पढ़ाई में मेहनत, ... को भी पढ़ाने में मेहनत होती है। देखा जाता है यह सभी को डिस्टर्ब करते हैं, पढ़ते नहीं हैं तो दिल होता है इनको हन्टर मारना चाहिए। स्कूल में हन्टर लगाते हैं ना। यह तो बाप है। बाप कुछ भी नहीं कह(ते) हैं। बाप के पास कानून नहीं है। यहां तो बिल्कुल ही शांत रहना होता है। बाप तो है सुख दाता प्यार का सागर। तो बच्चों की चलन भी ऐसी होनी चाहिए। जैसे कि देवताएं होते हैं। तुम बच्चों को बाबा सदैव ..... हैं तुम पदमापदम भाग्यशाली हो; परन्तु पदमापदम दुर्भाग्यशाली भी बनते हो। जो फेल होते हैं उनको तो दुर्भाग्यशाली ही कहेंगे ना। बाबा जानते हैं अन्त तक यह होता रहता है। कोई न कोई महान दुर्भाग्यशाली जरूर बनते हैं। चलन ऐसी होती है जो समझा जाता है यह ठहर न सकेंगे। इतना ऊंच बनने लायक नहीं। सभी को दुःख ही देते रहते हैं। सुख देना जानते ही नहीं। तो उनकी क्या हालत होगी। बाबा सदैव ..... अपनी सम्भाल करो। यह भी ड्रामा अनुसार होने का है जरूर। थोड़ी सी बात में क्रोध का एकदम भूत आ .... है। मुंह ही ..... मिसल और ही लोहे से भी बदतर बन जाते हैं। सो भी अच्छे2 फर्स्ट क्लास बच्चे, बहुत

जो गुस्से में आकर कब बाप को पत्र भी नहीं लिखते हैं। बिचारों की क्या हाल होगी। बाप तो रोज समझाते हैं। सर्व का सद्गति दाता बाप है ना। बाप कहते हैं मैं आया हूं सर्व का कल्याण करने। आज सर्व की सद्गति करता हूं, कल फिर दुर्गति हो जाती है। तुम कहेंगे कल हम विश्व के मालिक थे आज गुलाम बन गये हैं। अभी सारा झाड़ तुम बच्चों की बुद्धि में है। यह वन्डरफुल झाड़ है। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है यह झाड़ है, इनकी आयु कितनी है। झाड़ की आयु तो जरूर होनी चाहिए ना। इनको कहा ही जाता है कल्प–वृक्ष। जिसकी आयु एक कल्प है। कल्प में कितने वर्ष होते हैं यह किसको भी पता नहीं है। अभी तुम जानते हो कल्प माना पूरे 5000 वर्ष। 5000 वर्ष का एक्युरेट झाड़ है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। इस बेहद के झाड़ की नालेज अभी तुम बच्चों को मिल रही है। नालेज देने वाला है वृक्ष–पति। बीज कितना छोटा होता है, उनसे फल देखो कितना बड़ा निकलता है। यह फिर है वन्डरफुल झाड़। इनका बीज बहुत छोटा है आत्मा कितनी छोटी है। बाप भी बहुत छोटा है। इन आंखों से देख भी नहीं सकते। भल रामतीर्थ का बतलाते हैं उसने कहा मैं रामकृष्ण आगे बैठा था तो एक ज्योत उनसे निकली और मेरे में समा गई। ऐसी कोई ज्योत निकल कर फिर समा थोड़े ही सकती है। क्या निकला? गुरू से ज्योत निकल मेरे में समाई। आत्मा निकली तो फिर शरीर गिर पड़े। क्या राज़ है यह समझते नहीं हैं। ऐसे2 सा0 तो बहुत ही होते हैं; परन्तु वह लोग मान लेते हैं। फिर महिमा भी ...खते हैं। भगवानुवाच कोई भी मनुष्य की महिमा है नहीं। महिमा है तो इन देवताओं की और जो देवताओं ऐसा बनाने वाला है। बाबा ने कार्ड बहुत अच्छा बनवाया था। जयन्ती मनाना हो तो शिवबाबा की। (इन) (ल0ना0) को बनाने वाला भी शिवबाबा है ना। बस एक ही है। उस एक को ही याद करो और किसको पता नहीं है। यह खुद कहते हैं मैं ऊंच ते ऊंच बनता हूं फिर नीचे ते नीचे गिरता भी हूं। यह किसको भी (पता) नहीं है ऊंच ते ऊंच ल0ना0 ही फिर 84 जन्मों बाद नीच ते नीच बनते हैं। तत् त्वम। तुम भी (विश्व) के मालिक थे फिर क्या बन गये हो। सतयुग में कौन थे यह भी तुम जानते हो। तुम्हीं ही सभी थे। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। राजा–रानी भी थे। सूर्यवंशी डिनायस्टी भी थी। चन्द्रवंशी डिनायस्टी भी थी। बाबा कितना अच्छी ..... समझाते हैं। यह सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि चलती फिरती रहनी चाहिए। तुम चैतन्य लाइट हाऊस हो। सारी पढ़ाई बुद्धि में रहनी चाहिए; परन्तु वह अवस्था हुई नहीं है। होने की है। जो पास विद ऑनर होंगे उनकी यह अवस्था होगी। सारा ज्ञान बुद्धि में होगा। बाप के लाड़ले लवली बच्चे भी तब .....। बाप स्वर्ग की राजाई कुर्बान करते हैं ऐसे बच्चों पर। कहते हैं मैं राजाई नहीं करता हूं। तुमको देता (हूं)। इसको निष्काम सेवा कहा जाता है। बच्चे जानते हैं बाबा हमको सिर के ऊपर चढ़ाते हैं। तो ऐसे बाप को (कित)ना याद करना चाहिए। यह भी ड्रामा बना हुआ है बाप संगम युग पर ही आकर सभी को सद्गति देते हैं। (नम्बर)वार पुरूषार्थ अनुसार। नम्बरवन हाईयेस्ट बिल्कुल पवित्र। नम्बर लास्ट बिल्कुल ही अपवित्र। याद प्यार बाप सभी को देते हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कुछ भी मिथ्या अहंकार न आना चाहिए; परन्तु माया इतनी जबरदस्त है जो अकल ही चट कर देती है अच्छे2 महारथियों का। इसलिये बाप कहते हैं खबर(दार) रहना है। रथ का भी रिगार्ड रखना है। इस द्वारा ही तुमको बाप सुनाते हैं ना। इसने तो कब गाली नहीं (खाई) थी। सभी प्यार करते थे। अभी तो देखो कितनी गाली खाई है। बच्चे ही ऐसी चलन चलते हैं जिस कारण बाबा को और ब्रह्मा को भी गाली खानी पड़ती है। ट्रेटर बन भागन्ती हो जाते हैं। तो फिर उनकी गति क्या होगी। फेल होंगे ना। बाप समझाते हैं माया ऐसी है इसलिये बहुत खबरदार रखते हैं। माया किसको छोड़ती नहीं है। सभी प्रकार की आग लगा देती है। बाप कहते हैं मेरे सभी बच्चे काम चिक्षा पर चढ़ काले बन गये हैं। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम गोरा बन जावेंगे। सभी काम चिक्षा पर चढ़ बिल्कुल काले कोयले बन गये हैं। ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो दिन में दो/चार बार भी काम चिक्षा पर चढ़ते हैं। वेश्याएं तो सारा दिन यही धंधा करती हैं। तो जरूर भ्रष्ट भी होंगे ना। एकदम काले कोयले बन जल मरते हैं।

सभी तो एक जैसे नहीं होते हैं। न सभी का एक जैसा पार्ट है। हरेक का अपना2 पार्ट है। इनका नाम ही है वेश्यालय। कितना बार काम चिक्षा पर चढ़े होंगे। रावण कितना जबरदस्त है। बुद्धि ही पतित कर देती है। यहां आकर बाप से शिक्षा लेने वाले भी फिर ऐसे बन जाते हैं। माया गठर में डाल देती है। यह है ही रौरव नर्क। रात-दिन यही धंधा करते हैं। वैश्यालय को उठाने की कोई को ताकत नहीं है। जो कि ऑफिसर लोग ही ऐसे काले कोयले हैं। तो उठावेंगे फिर कैसे। दुनियां की हालत बहुत बिगड़ी हुई है। सिवाय बाप की याद क्रिमनल आंखें सिविल बन नहीं सकती हैं। इसलिये सूरदास की कहानी है। है तो सुनाई हुई बात। दृष्टान्त देते हैं। वह इतना कामी था जो सर्प को रस्सी समझ ऊपर चढ़ा। अभी सर्प को कैसे हाथ लगावेंगे! यह एक मिसाल बनाया सर्प पर चढ़ गया। फिर वेश्या ने ठोका। यह क्या! तुमको पता नहीं पड़ता है। विषय-विकार के पिछाड़ी इतना अंधा बन गये हो। तब उनको गुस्सा लगा और आँखें निकाल दी। बाप कहते हैं सभी हैं अंधे के औलाद अंधे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। अज्ञान माना अंधियारा। कहते हैं ना तुम अज्ञानी अंधे हो। अभी ज्ञान है गुप्त। इसमें कुछ बोलने का नहीं है। एक सेकण्ड में सारा ज्ञान आता है। सबसे सहज है ज्ञान। फिर भी अन्त तक माया की परिक्षा चलती रहेगी। 4/6 आना भी मुश्किल अवस्था ठहरती है। इस समय तो तूफान के बीच में हैं। पक्के हो जावेंगे फिर इतना तूफान नहीं आवेगा। गिरेंगे नहीं। फिर देखना तुम्हारा झाड़ .... में बढ़ता है। नामाचार तो होना ही है। थोड़ा विनाश होगा तो फिर बहुत खबरदार रहेंगे। फिर बाप की याद को एकदम चटक जावेंगे। समझेंगे टाइम बहुत ही थोड़ा है। बाप तो बहुत अच्छा समझाते हैं। आपस में बहुत ही प्यार से चलो। आँखें न दिखाओ। क्रोध का भूत आने से एकदम सिकल ही बदल जाता है। तुमको तो ऐसी सिकल वाला बनना है ना। एमआबजेक्ट सामने है। सा0 पिछाड़ी को होता है जबकि ट्रान्सफर होते हैं। पहले शुरू में तुमको दिखाया था। श्री कृष्ण का कैसे सा0 होता है। उस समय सभी साज तुम्हारे पास थी। कैसे ध्यान में जाते थे। अभी वह एक भी नहीं हैं। वह पार्ट पूरा हो गया। उस समय तो कोई डरते थे, कोई बिल्कुल ही ..... डरते थे। भागने वाले भाग गये। फिर यहां नजदीक आ गये तो कितने भागे। तुमको बाप ने कितना खुशी में लाया। कितनी पार्ट दिखाते थे। फिर पिछाड़ी में बहुत पार्ट देखेंगे। तुम बहुत खबरदार रहेंगे। मिरवा मौत मलूक का.....। पिछाड़ी में बहुत सीन सीनरी देखते रहेंगे। तब तो फिर पछतावेंगे भी ना हमने यह यह किया। उनकी सजा भी बहुत कड़ी मिलती है। बाप आकर पढ़ाते हैं उनकी भी इज्जत न रखे तो सजा मिलेगी। सभी ..... कड़ी सजा उनको मिलेगी जो विकार में जाते हैं या शिवबाबा की बहुत ग्लानि कराने निमित्त बनते हैं। (माया) बड़ी जबरदस्त है। बिगड़ते हैं तो फिर एकदम ट्रेटर बन पड़ते हैं। स्थापना में क्या क्या होता है। तुम तो देवता बनते हो ना। सतयुग में असुर आदि होते ही नहीं। यह संगम युग की ही बात है। असुर लोग कितने दुःखी होते हैं। बच्चों को मारते हैं शादी जरूर करो। स्त्री को विकार के लिये कितना मारते हैं। कितना सा..... हैं। कहते हैं सन्यासी भी न रह सके। यह फिर कौन है जो पवित्र रह दिखाते हैं। आगे चल समझेंगे भी (जरूर) सिवाय पवित्रता के देवता तो बन नहीं सकते। तुम समझते हो हमको इतनी प्राप्ती होती है तब छोड़ .... सन्यासियों को तो मिला कुछ भी नहीं है। भगवानुवाच काम जीते जगत जीत ऐसा ल0ना0 बनेंगे तो क्य(ि) नहीं पवित्र बनेंगे। फिर माया भी बहुत पछाड़ती है। ऊंची पढ़ाई ना। बाप आकर पढ़ाते हैं। यह सुमिरण अच्छी ... नहीं करते हैं तो फिर माया थप्पड़ लगा देती है। माया अवज्ञाएं भी बहुत कराती है। फिर उनका क्या हा... । माया ऐसी बेपरवाह बना देती है, अहंकार में ले आती है बात मत पूछो। नम्बरवार राजधानी बनती है । (इस) कारण से बनेंगे ना। अभी तो पास्ट, प्रजेन्ट, फ्युचर का सारा ज्ञान मिलता है। तो कितना अच्छी रीत ..... चाहिए। अहंकार आया और यह मरा। माया एकदम वर्थ नॉट ए पेनी बना देती है। बाप की अवज्ञा हुई, बाप को याद कर न सके। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।